अध्याय - दूसरा

चेहरे : नाटक का तात्त्विक विवेचन

२) "चेहरे" नाटक का तात्त्विक विवेचन

"चेहरे" नाटक में वर्तमान जीवन के क्रूर आंतरिक और बाह्य सत्य को उद्घाटीत कीया है। नाटककार डॉ॰ शंकर शेष ने मानव की क्रूरता और नग्नता में मानवीय मूल्य बोधको समाज के सामने प्रतिपादीत किया है। "चेहरे" नाटक में जितने चेहरे हैं वे बाहर से कुछ और अंदर से कुछ दिखानेवाले हैं। चोर को खाल में ईमानदार और साह को खाल में चोर छिपाये रहते है। जो जैसा दिखायी देता है वैसा नहीं है। यह प्रश्न "चेहरे" नाटक में लेखक ने उठाया है।

क्रूर यथार्थ से साक्षात्कार करनेवाला यह नाटक डॉ॰ शेष की प्रतिभा की एक और सशक्त अभिव्यक्ति है।

वर्तमान जीवन में हर व्यक्ति सभ्यता की नैतिकता की भाषा करता है। पर संवादों की परस्परता व्यक्तियों के चेहरों से सभ्यता, आदर्श का घुंघट उतारती चली जाती है। प्रतिष्ठा का मुखौटा पहनकर आदमी समाज का शोषण करता है। अपराधी व्यक्ति भी न्यायासन पर बैठकर नैतिक कर्तव्य की भाषा करता है, इसका चित्रण "चेहरे" नाटक में नाटककार डॉ॰ शंकर शेष ने किया है। समाज में रहनेवाले हर स्वार्थी व्यक्ति की पोल खोलने का और उसका असली रूप समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास नाटककार ने पूरी सफलता के साथ किया है।

२-१ कथावस्तु

" पेहरे " नाटक की कथा समाज सेवक भारोसे जी की मृत्यु और बारिश के कारण दाह - संस्कार की समस्या को लेकर खड़ी की गयी है। एक खण्डहर में एक ओर विनोद और कमली जो एक दूसरे से प्रेम करते हैं, ठहरे है। इसी खण्डहर में भारोसे नाम के समाजसेवक का शव लेकर गाँव के लोग आते हैं। एक ग्रामीण, कुछ सामान लेकर बिटिया को लाने के लिए जा रहा था वहाँ बारिश के कारण खण्डहर में रुक जाता है। खण्डहर के एक तरफ खाम्बाटा और कुमार ये दो युवक जो बंबई जा रहे थे, वे भी ठहरे हैं। सारी घटनाओं का चक्र खण्डहर जैसे एक ही स्थान पर घटित होता है।

भावानजी, गेंदासिंह, परमानंद, विनोद, पंडितजी तथा अध्यापिका धीरे धीरे एक - दूसरे के अंदर के पेहरे को स्पष्ट करते हैं। " पेहरे " नाटक की कथा पात्रों के माध्यम से जीवन का वास्तविक चित्र स्पष्ट करती है। पात्रों के संवादों के माध्यम से सामाजिक आशय को व्यक्त करते है। यह नाटक व्यक्तियों की नीचता और उच्चता दोनों का चित्र प्रस्तुत करता है।

नाटक मुलत: जीवन की अभिव्यक्ति है। नाटक जीवन की गति है। इस संसारिक मंचपर आदमी अभिनय करता है। पेहरे पर पेहरा चढ़ाए अपना असली रूप छिपाये रखता है। पंचायत का पंच परमानंद अपनी विधवा भाभी का छोत हड़पकर नैतिक कर्तव्य की बात करता है। गेंदासिंह को सवाल करना अपना नैतिक कर्तव्य मानता है। कमली और विनोद को अनैतिक [नाजायज]

संबंध रखने के कारण सजा मिलनी चाहिए ऐसा भी कहता है।

पंचायत के रुपयों को हड़प करनेवाला सुखालाल हमारी जिंदगी तो एक खुली किताब है जो चाहे पढ़े " ऐसा बेशर्मी से कहता है। पंचायत के पैसों का गबन करनेवाला सुखालाल पंच बनकर मंदासिंह से कहता है - हमारे गाँव की नाक नीची करने में मंदासिंह ने कोई कसर नहीं रखी। उसे सजा मिलनी चाहिए। धर्म और शास्त्र की व्याख्या करनेवाले पंडितजी, जिनकी अक्लों का पानी नहीं चलता लेकिन उनकी औरतें चलती है इतने बौने और घिनौने पंडितजी न्यायासन पर आरूढ है। युवा विनोद तथा युवती कमली के संदर्भ में जो चर्चा चलती है उसमें गंभीर किस्म के नैतिक सवाल आते हैं। स्त्री - पुरुष संबंध। यह मामला पुलिस का न होकर घर - घर का मामला है। इसकी पूरी तरह जाँच होनी चाहिए , ऐसा कहते है। पर उनकी धर्म और शास्त्र की व्याख्या हमेशा समय के अनुसार बदलती है।

मठाधिशों की सुख - सुविधानुसार धर्म अपने कपड़े उतारता पहनता रहता है। इन ठेकेदारों ने सुख - सुविधा और लोभ लालच में मानव - मन की श्रध्दा - विश्वास का जितना दम घोटा है उतना किसी पूँजीपति ने भी किसी मजदूर का शोषण नहीं किया होगा। परिस्थितीनुसार इनका आचरण - व्यवहार, धर्म जीवन की परिभाषाएँ कुछ अदलती - बदलती रहती है।

" मृत्यु की गंभीरता बनाए रखो! बनाए रखो!" ऐसा बार बार कहनेवाले भवानजी प्रथम भारोसेजी और अध्यापिकाजी का शोषण करता है। अध्यापिकाजी की कमाई पाप की थी लेकिन शरीर मिल जाता तो उसे तीरथ - स्थान मानते। भवानजी भारोसेजी की सारी संस्थाओं पर कब्जा करने के लिए भजन, गीता - पाठ गंभीरता बनाए रखने का आग्रह करते है। यह सब दिखावटीपन इसलिए है कि अपने आप को उनका उत्तराधिकारी साबित करने की साजिश है। भवानजी हर बात को चुनाव के एंगल से देखते है। पंचायत की सरपंची पर उनकी निगाह है।

भारोसेजी को वे लोग समझ नहीं पाये। गाँव के कल्याण के लिए एक तपस्वी की तरह सारी जिंदगी गाँव के लिए खपा दी थी। वे अहिंसा के पुजारी थे। गाँव को उन्होंने एकता का संदेश दिया था। गाँव में चेतना भर गाँव को जागृत किया। गाँव में एक स्कूल खोला, आश्रम खोला, पर अपने लिए कुछ नहीं किया। भारोसेजी को प्यारी थी लोकसेवा, जनसेवा। भारोसेजी अध्यापिकाजी को वेश्यालय से निकालकर लाये थे। बची जिंदगी अध्यापिकाजी दूसरों के लिए सहकार्य में लगाना चाहती है। भारोसेजी अध्यापिका के लिए सबकुछ थे। उन्होंने अध्यापिका के लिए सबकुछ दिया था जो एक पति अपनी पत्नी को, एक मित्र अपने मित्र को और गुरू अपने शिष्य को देता है। यहाँतक कि वे अध्यापिकाजी के साथ विवाह करना चाहते थे। लेकिन अध्यापिकाजी नहीं चाहती थी कि उनकी प्रतिभा को धक्का लगे।

अध्यापिकाजी भारोसेजी के साथ अपने संबंध स्पष्ट करते हुए कहती है " क्या अतीत के दिन भूलकर सार्थक

जिंदगी जीने का, मुझे हक नहीं है ? ये जो पंचायत बनाकर बैठे है, जो खुद शीशे के घरों में रहते के बाद दूसरे के घरोंपर पत्थर फेंकने की खतरनाक कोशिश कर रहें है। ये पंच बनकर बैठे लोग क्यों अपना चेहरा नहीं देखते ? क्यों नहीं देते गेंदासिंह के सवालों का जवाब ? क्योंकि ये डरते है कि इनके चेहरे अपने आप पिघलकर टपकने लगेंगे। सामने आयेगी इनकी भेड़िया - सी शक्ल। ऐसे बगुलों की खाल में समाज के दुश्मनों सेतो गेंदासिंह जैसे भेड़िए कई अच्छे है । जिन्हे आता हुआ देखकर मानव अपना बचाव तो कर सकता है । अध्यापिका निर्भय होकर सबके चेहरे के नकाब उतारती है।

नाटककार ने स्पष्ट किया है कि किसी की मौत होती है तो ये लोग श्रध्दांजली अर्पित करने के लिए दो मिनट भी शांत बैठ नहीं सकते। सिर नीचा करके फिसिट - फिसिट हँसते है। तो मौत की गंभीरता बनाए रखने की आवश्यकता क्या है ? शोकसभा का आयोजन कहाँ तक ठीक है ? भजन गीता - पाठ, मृत्यु की गंभीरता सब ढोंग है और क्या ?

आज व्यक्ति स्वार्थान्धता का राक्षस अपने अंदर छिपाये रखता है। स्मशानभूमि में आकर भी अन्तिम क्रिया में भाग लेने और मौन श्रध्दांजलि देने के अतिरिक्त नाटक के सभी पात्र वह सब कुछ करते है जो उन्हें नहीं करना चाहिए। प्रेम - प्यार, व्यापार के नफे नुकसान की चिंता, शराब और सिगरेट का आनंद, एक दूसरे पर कीचड़ उछालना, ताश और ट्रॉजिस्टर के न होने का दु:ख प्रकट करना , अगली बार शव यात्रा में

शामील होते समय ताश रखाना न भूलने की प्रतिज्ञा करना, पंचायत बिठाना, मारना - पिटना एक दूसरे को ब्लैकमेल को धमकी देना, शव के समक्ष बैठ ग्रामीण को लुटने की साजिश करना, प्रेस - रिपोर्टरों के अलग - अलग मुद्राओं से फोटो खिंचवाना और एक दूसरे के चेहरोंसे नकाब उलटाना आदि । इन घटनाओं को प्रस्तुत करने के लिए नाटककार ने खंडहर जैसा स्थान चुना है। जिनके माध्यम से नाटककार को मनुष्य की क्रूरता पाशविकता, संवेदनहीनता और आत्मविघटन को दर्शाया है। वस्तुत: आज के जीवन का यही सच है।[५]

नाटककार डॉ॰ शंकर शेष मृत्यु की व्याख्या करते है कि - " मृत्यु शरीर का अंतिम धर्म है पर भूखा निरंतर स्वभाव। मृत्यु और कुछ नहीं जीवन का अंतिम सत्य का साक्षात्कार है। समाज के तथाकथित प्रतिष्ठित लोगों का चेहरा अर्थात हमारे अपने सब के अंदर से कुछ और बाहर से कुछ दिखायी देनेवाला चेहरा है। इसके अलावा नेता बनने का फार्मूला बताते है । नैतिक - अनैतिकता, पाप - अनाचार, लडकियों को बंबई जाकर बेचना, स्त्री - पुरुष संबंधों के नैतिक सवाल सामाजिक - असामाजिक समस्या पर चर्चा की है।

२-६२] कथोपकथन :-

" चेहरे " नाटक की भाषा पात्रानुकूल है। संक्षिप्त संवादोद्वारा कथानक विषयों का विश्लेषण अधिक करता है। कथा में पात्रों के आंतरिक विचारों का विश्लेषण अधिक है। नाटक की सफलता, विफलता संवादों पर निर्भर है।

चेहरे नाटक में कई संवाद संक्षिप्त है। तो कहीं कहीं जो को उबा देनेवाले है। उदा॰ विनोद और कमलो का संभाषण संक्षिप्त संवादोंद्वारा चलता है। पर कुमार और शाम्बाला के तथा अध्यापिकाजो के संवाद बोझिलता पैदा करते है। घटना तथा चरित्र को , स्पष्ट करनेवाले संवाद है। " चेहरे " नाटक में संवादों को परस्परतरता व्यक्तिओं के चेहरों से नकाब [पर्दा] उतारती चली जाती है। इस नाटक में लेखक का स्वर व्यंग्यात्मक रहा है। कुछ पात्रों को समाज के सामने लाकर जीवन का घिनौना वास्तविक चित्र स्पष्ट करता है । सभी संवादों के बीच नाटककार अपना सामाजिक आशय स्पष्ट करता है । यह नाटक संवादों के माध्यम से व्यक्ति की उच्चता - नीचता दोनों को स्पष्ट करता है । इस नाटक में घटनाएँ नहीं है लेकिन अलग - अलग व्यक्तिओं के द्वारा किये गये संवाद है, जिनसे व्यक्ति और समाज के संदर्भ में भीतर और बाहर के भेद , करनी और कथनी के अंतराल, सोच की उच्चता और कर्म की नीचता को विसंगति व्यक्त करते है।

नाटक की, आधारशिला संवादों पर निर्भर होती है । संवाद संक्षिप्त , सारगर्भित, उद्देश्यपरक, घटना चरित्र को स्पष्ट करनेवाले है । अध्यापिकाजो अपने संभाषण द्वारा निर्भय होकर सबके चेहरों के नकाब उतारती है।

२-३ चरित्र चित्रण

२-३-१ भरोसेजी :-

लोकसेवा तथा समाजसेवा करनेवाला समाजसेवक।

जिसको लाश खण्डहर में बारिश के कारण पड़ी है ऐसा व्यक्ति - भारोसेजी। जो मृत लाश के रूप में नाटक में मौजूद है। भारोसेजी ने गाँव के लिए अपना जीवन एक तपस्वी की तरह खपा दिया था। उन्होंने गाँव के कल्याण के लिए अपने जीवन का एक - एक क्षण दिया है। गाँव में स्कूल खोली। आश्रम खोला। गाँव में नयी चेतना भर दी थी। सोये हुए गाँव को उन्होंने जगाया। गाँव के लोगों की सेवा, निष्ठा, श्रद्धा के साथ करनेवाले भारोसेजी ने अपने लिए जायदाद इकट्ठा की। उन्हें प्यारी थी लोकसेवा। उनके जीवन का मूलमंत्र था - त्याग, तपस्या, सेवा।

अगर वे चाहते तो सत्ता हासिल कर किसी उच्चपद पर अपना आसन जमासकते। लेकिन उनको प्यारी थी जनसेवा। अध्यापिकाजी एक वेश्या थी लेकिन भारोसेजी उसे वेश्यालय से निकालकर अच्छी जिंदगी जीने के लिए लाये थे। भारोसेजी अध्यापिकाजी के लिए सबकुछ थे। इन्सानियत के नाते उन्होंने अध्यापिकाजी को वह कुछ दिया जो एक गुरु अपनी शिष्या तथा एक मित्र अपने मित्र को, एक पति अपनी पत्नी को जो देता है वही सब।

२-३-२ भानजी :-

आदर्शोंका ढिंढोरा पिटनेवाला नेता। पंचायत की सरपंची पर तथा सत्तापर निगाह रखनेवाला एक ढोंगी। - -

नाटककार डॉ॰ शंकर शेष ने " पेहरे " नाटक में भवानजी का चित्राण करते समय नेताओं की चारित्रिक खूबियों पर व्यंग्य किया है। लीडर बनने का फॉर्मुला बताया है।

" मृत्यु को गंभीरता बनाए रखो, बनाए रखो।" ऐसी रट लगानेवाले भवानजी। सबसे पहले उन्होंने भारोसेजी तथा अध्यापिकाजी का शोषण किया था। अध्यापिकाजी के गहनों को पाप की कमाई बतलाकर कम दामों में खारीदा था। अध्यापिका के शरीर पर उनकी बुरी नजर थी। अध्यापिकाजी की कमाई पाप थी लेकिन उनका शरीर अगर इन्हें मिल जाता तो तिरथा - स्थान मिल गया समझनेवाला एक ढोंगी, स्वार्थी आदमी है। भवानजी सहानुभूति दिखाने का नाटक समाज के सामने करता है।

वह लाश के पास बैठकर आँसू बहाता है। भजन, गीतापाठ, मृत्यु को गंभीरता बनाए रखने का उनका आग्रह सबकुछ स्वार्थ को जड़े है, क्योंकि वह अपने आप को भारोसेजी का उत्तराधिकारी साबित करने का प्रयास कर रहा है। हर बात को चुनाव के ऐंगल से देखनेवाले भवानजी की निगाह ग्रामपंचायत के सरपंची पर है। भारोसेजी का आश्रम, स्कूल या संस्थाएँ हासिल करने का इरादा भगवानजी का है। पिछले साल से भारोसेजी बीमार थी, तब से भवानजी उनकी सारी संस्थाओं पर कब्जा करने की पेशकश कर रहे थे। इनकी गन्दी नजर हजारों बार अध्यापिका जी के शरीर पर गड़ चुकी है। वह खुद चरित्रहीन व्यक्ति होकर भी सभ्यता, आदर्श का पर्दा चेहरे पर पहनता है।

नाटककार ने तथाकथित समाज में जो लोग प्रतिष्ठतों का ढोंग करते हैं उन पर करारा व्यंग्य किया है। भावानजी देखाने में सभ्य आदर्शवादी लगते है। लेकिन उनके अंदर स्वार्थ का राक्षस छिपा है। नाटककार ने उनके चेहरे की क्रूरता एवं नग्नता को पेश किया है। नाटककार ने मनुष्य की क्रूरता, पाशविकता, संवेदनहीनता, आत्मविघटन को दर्शाया है। वस्तुत: आज के जीवन में यही सच है। भावानजी आदर्शोंका ढिंढोरापीटनेवाला आज के नेता जैसा नेता है । सत्ता की लालसा उनके हृदय में छिप गयी है। इसलिए वह घिनौनी , बौनी साजिश करता है।

आज का समाज ही ऐसा है जिसकी रग - रग में बनावटीपन, मूल्यहिनता, मौकापरस्ती के बीज उठने लगे हैं। बिना स्वार्थ के वह किसी से सहानुभूति नहीं रखाता। यदि जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हो तो अभिनय करो । जितना अभिनय सफलता पूर्वक करोंगे उतनेही आगे निकल जावोगे। भावानजी अपनी दूरदृष्टि से सफल ढोंगी अभिनय करते है। आज की विडम्बना यही है।

२-३-३ पंडितजी :-

धर्म और शास्त्र की व्याख्या परिस्थितिनुसार, बदलनेवाला घिनौना पंडित ----

अपनी सुख - सुविधानुसार धर्म की व्याख्या बदलनेवाले मठाधिशों पर नाटककार ने व्यंग्य किया है। परिस्थिति

के अनुरूप पंडितजी का धर्म अपने कपडे पहनता - उतारता रहता है। पंडितजी जैसे ठेकेदारों के लोभ - लालच ने मानव - मन की श्रद्धा, विश्वास का गला घोंटा है। किसी पूँजीपति ने भी किसी मजदूर का शोषण नहीं किया होगा, इतना शोषण इस समाज इस समाज का पंडित - जी जैसे पाखंडियों ने किया है। धर्म के नाम पर समाज का शोषण करनेवाले इन पाखंडियों ने समाज का विश्वास ही खत्म कर डाला है।

धर्म और शास्त्र की व्याख्या करनेवाले, पुजा-पाठ, भजन, गीतापाठ करनेवाले पंडितजी, गेंदासिंह के सवाल का जबाब देने में न डरनेवाले पंडितजी गेंदासिंह को नीच हरकत करने के कारण कड़ी से कड़ी सजा दी जानी चाहिए कहनेवाले पंडितजी, विनोद और कमले कमली के संदर्भ में कहते है - इसमें जुड़े है गंभीर किस्म के नैतिक सवाल। स्त्री - पुरुष संबंधी। ऐसे पंडितजी को अछूतों का पानी नहीं चलता लेकिन औरते चलती है।

इसप्रकार ढोंगी पंडितजी आज के आधुनिक समाज में कम नहीं है। ये धर्म पूजापाठ, भजन करके समाज का शोषण तो करते है लेकिन उनके पास किसी भी प्रकार का नैतिक बल नहीं है। कर्मकाण्ड के नाम पर ये समाज का पूरा शोषण करते हैं। भोले भाले लोगों को ठगाते भी हैं। नाटककार ने ढोंगी पंडित का चित्रण इस नाटक में किया है।

२-३-४ अध्यापिकाजी :-

एक वेश्या होकर भी नया संकल्प करके दूसरों को सेवा करनेवाली नारी।

अध्यापिकाजी एक वेश्या थी। भारोसेजी उसे वेश्यालय से निकालकर ले आये थे। वह भारोसेजी की संस्था में (स्कूल में) अध्यापन का कार्य करती है । वे श्या व्यवसाय छोडकर नयी जिंदगी जीने का अध्यापिकाजी ने संकल्प किया है। यह नयी जिंदगी में प्रवेश है। वह अपना अतीत भूलकर दूसरों की सेवा करने में जीवन बिताना चाहती है। भारोसेजी उनके लिए सबकुछ है। अध्यापिकाजी के जीवन का सहारा ही भारोसेजी है। ईमानदारी के साथ वह अध्यापन का कार्य करती है।

अध्यापिकाजी और भारोसेजी के बारे में लोगों ने अनेक अफवायें फैलाई है। अध्यापिकाजी और भारोसेजी के बीच अनैतिक संबंध है य ऐसी अफवाहे गाँव में फैल गयी है। किसी भी अफवाह की लापरवाही से ठुकरा देती है। निडरता से समाज के सामने निर्भय होकर अपने और भारोसेजी के क्या संबंध थे ? इस सवाल का जबाब देती है। वह कहती है," भारोसेजी मेरे लिए सबकुछ थे। उन्होंने मुझे वह सबकुछ दिया जो एक पति अपनी पत्नी को - एक मित्र अपने मित्र को और एक गुरु अपने शिष्य को दे सकता है। भारोसेजी मुझसे विवाह करना चाहते थे लेकिन मैंने मना किया। मै नहीं चाहती उनकी प्रतिभा को धक्का लगे।

अध्यापिकाजी सभी लोगों से सवाल करती है कि क्या हमें अतीत की लाश को कन्धे से उतारकर नयी सार्थक जिंदगी जीने का हक नहीं था ? आज के समाज में भी यही सवाल उठता है। " कमल तो कियड़ में खिलता है। उसी

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

किसी का जीवन कमल की तरह खिल जाएगा तो समाज उसे स्वीकार नहीं करेगा क्या ? "

एक वेश्या व्यवसाय करनेवाली नारी भी इन्ही ढोंगी लोगों से अच्छी है ऐसा नाटककार बताता है। अध्यापिकाजी अपना सच्चा रूप (असली रूप) समाज के सामने रखती है । पर ये समाज में प्रतिष्ठित आदर्शवादी व्यक्ति अपना असली रूप छिपाकर समाज का शोषण करते हैं। इनसे कई ज्यादा अच्छी वेश्याएँ होती है । जिन्होंने अपना शरीर बेचकर कमाया सब पैसा, गहने, स्कूल और आश्रमपर खर्च किया। पर ये गाँव के लोग तो पशु है पशु। अध्यापिकाजीने अपने आदर्शवाद की झाँकी इस नाटक में दिखायी है।

भारोसेजी की मौत का सबसे ज्यादा सदमा अध्यापिकाजी को पहुँचा है। अध्यापिकाजी का रोना ही असली सहानुभूती है पर ये सब लोक दिखावे के लिए श्मशानभूमि में आये है। अध्यापिकाजी भारोसेजी को अपना देवता, अपनी श्रध्दा मानती है।

२-३-५ गेंदासिंह :-

सब की पोल खोलनेवाला युवक पर स्वयं भी एक चोर। - -

गेंदासिंह गाँव के लोगों के संग भारोसेजो को आरधी के साथ आया था। लेकिन खाण्डहर में विनोद और कमलो को देखकर उनके मन में शक पैदा होता है कि विनोद ने कमलो को अपने फाँसे में फसाँया है। इसलिए वह दोनों पर कड़ो नजर रखाता, जब श्रध्दांजलि अर्पित करने के लिए सभा का आयोजन हो चुका था, तब गेंदासिंह को नजर विनोद और कमलो पर थो। सभा को कार्यवाही शुरु होतो है। भवानजो का भाषण चल रहा है, कमलो भाषण सुन रही है, तब विनोद संदूक उठाकर भागने को तैय्यारो करता है। गेंदासिंह विनोद का हाथ पकड़ता है। संदूक में कमलो के कुछ गहने हैं। गहने बाँटने को बात होतो है। विनोद और गेंदासिंह आपस में सब गहने बाँट लेते है।

गाँव के कुछ युवक गेंदासिंह और विनोद को गाँव के लोगों के सामने लाते है। गेंदासिंह पर चोरो का इल्जाम लगाया जाता है। इसका फैसला करने लिए पंचायत बैठ जातो है तब गेंदासिंह सब पंचायतो लोगों को पोल खोलता है। सब पंचायतो वालोंको नंगा करता है।

सुखालाल, भवानजो, पंडितजो, तथा अध्यापिकाजो पर वह आरोप करता है। सुखालाल, भवानजो, पंडितजो कुछ नहीं बोलते। गेंदासिंह के सवालो का जबाब नहीं देते पर अध्यापिका जो उनके सवालों का जबाब देतो है।

युवकों को पोढ़ो के मुँह पर कालिखा पोतनेवाले गेंदासिंह है। अपनो नीचता छिपाने के लिए वह सभो लोगों को

नोघता सबके सामने प्रस्तुत करता है। सभी लोगों को सवाल करता रहता है। ऐसा यह गेंदासिंह " चेहरे " नाटक में आज की युवा पीढि का प्रतिनिधित्व करनेवाला चरित्र है।

२-३-६ कुछ अन्य पात्र :-

१] विनोद - कमली :-

विनोद बंबई का रहनेवाला युवक है जो कमली को हिरोईन बनाने का लालच दिखाकर बंबई ले जाना चाहता है। लड़कियों को फँसाना , उनके गहने छीनना, और उन्हें बंबई ले जाकर बेचना क इसका धंदा है। वह कमर कमली को प्यार का नाटक करेके अपने चंगुल में फँसाता है। विनोद प्यार का नाटक करके कमली जैसी भोली -भाली लडकी के साथ दगाबाजी करता है। कमली सीतापूर गाँव की रहनेवाली ग्रामीण युवती है। हिरोईन बनने का उसे शौक है। इसलिए विनोद के साथ बंबई जाकर हिरोईन बनना चाहती है। गाँव की रहनेवाली ग्रामीण युवती के रूपमें कमलीको " चेहरे " नाटक में नाटककार ने चित्रित की है। दगाबाज, हरामीपन, चोर, प्यार का नाटक करनेवाल, लडकियों के गहने छीननेवाला, उन्हें बंबई ले जाकर बेचनेवाला ऐसा धंदा करनेवाला विनोद बंबई में रहनेवाला शहरी युवक दिखाया है।

२-३-७ २] खाम्बाटा - कुमार :-

खाम्बाटा - कुमार बंबई जाने के लिए निकला युवक है। बारिश के कारण खण्डहर में ठहरते हैं। किसी मुनजी से

से उन्हें रॉ मटीरियल का आर्डर मिलनेवाला है। पर वे पास मेहो भरोसेजो को लाश सामने होते हुए भी शराब पीना, सिगरेट पीना बंद नहीं करते। उस लाश से उनका कोई मतलब नहीं है, इतने वे संवेदनशून्य है।

२-३-८ ३] परमानन्द :-

पंचायत का एक सदस्य जो अपनी विधवा भाभी को जमीन हड़पकर उन्हें यतीम कर देता है। पर पंचायत के न्यायासन पर बैठकर न्यायाधिश जैसी बाते करता है। नैतिक दृष्टसे उसे पंचायत के न्यायासन पर बैठने का कोई अधिकारी नहीं है। मेंदासिंह विनोद - कमली को सवाल करना अपना नैतिक कर्तव्य मानता है। असल में परमानंद को सवाल करने का अधिकार नहीं है। पर वह प्रतिष्ठा, नैतिकता, आदर्श का मुखौटा, धारण कर सवाल करता ही रहता है। बेशर्म, स्वार्थी, अवसरवादी चरित्र वाला वह है।

२-३-९ ४] सुखालाल :-

नीति और आचार के नामपर सुखालाल ने भरोसेजो और अध्यापिकाजो के नाम अफवाहों का जहर बोया है। " अपनी जिंदगी तो एक खुली किताब है, जो चाहे पढ़ले " कहनेवाले सुखलाल जी तो पंचायत के रुपयों को हड़प करते है। धंदे की रकमे डकारना इसको हमेशा की आदत है। ये सुखालाल पंचायत का सदस्यत्व प्राप्त करके मेंदासिंह को सजा पक्की करते हैं।

न्याय देवता के आसन पर आरूढ़ होकर प्रतिष्ठा, निस्वार्थी होने का दंभ भरनेवाले सुखालाल खुद तो दोषी है। लेकिन आदर्शवाद का मुखौटा धारण कर सजा पक्की करते हैं।

२-३-१० **युवक तथा रमाकांत**

युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करनेवाले ये सभी युवा पात्र है। जिन्हें लोगों को परख नहीं है। ऐसे ये युवा लोग अपने पूर्वजनों को आदर्शवादी मानते है। स्वभाव के अनुरूप परिस्थिती की पहचान इन्हे नहीं है। इसलिए शोक के समय भी फिल्मी गाने की अंताक्षरी खेलते है। ताश और ट्रांजिस्टर के न होने का दु:ख प्रकट करना, अगली बार शव यात्रा में शामिल होते समय ताश रखना न भूलने की प्रतीज्ञा करना, मारना पीटना आदि बातों में मजा लेनेवाले ये युवक अपनी जिम्मेदारी भूल जाते हैं।

२-३-११ **ग्रामीण :-**

भोला - भाला अनपढ़ एक ग्रामीण अपनी बिटिया के लिए कुछ कपड़े, कुछ खान-पान का सामान, रस्म पूरी करने के लिए जा रहा था। बारिश के कारण खण्डहर में वह ठहर जाता है। मुर्दे की छाया पड़ने के कारण अरथी के साथ आये ये लोग ग्रामीण के खानेपर गिध्द दृष्टि रखते है।

अपने समाज में एक रिवाज है जब तक अरथी घर में या गाँव मे है तब तक किसी के घर में कोई खाना नहीं खाता लेकिन ये लोग अरथी के साथ आकर भी भोले ग्रामीण के खाने पर गिध्द दृष्टि रखाते हैं। मुर्दे के पास बैठकर खाना खाना चाहते है। ऐसे लोगों को क्या कहा जाय समझ में नहीं आता।

२-४ देशकाल - वातावरण :-

" चेहरे " नाटक का कथानक समाजसेवी भरोसेलाल की मृत्यु और उनके दाह - संस्कार की समस्या को लेकर चलता है। यह नाटक डॉ॰ शंकर शेष ने प्रारंभिक रूप से दूरदर्शन के लिए लिखा था। इसलिए सभी घटनाएँ एक जगह पर घटीत होती है।

" चेहरे " नाटक कथावस्तु के द्वारा नहीं लेकिन संवादोद्वारा चलता है। एक ही जगह पर सारी घटनाएँ घटित होती है। यह जगह है खण्डहर, जहाँ पर एक ग्रामीण अपनी बिटिया के लिए कुछ कपड़े और खाने का सामान लेकर बारिश के कारण ठहरा है। उसी खण्डहर में बंबई जाने के लिए निकले दो प्रेमी विनोद और कमली ठहरे है। कुमार - खाम्बाटा किसी काम के लिए बंबई जा रहे थे लेकिन बारिश के कारण खण्डहर का सहारा उन्होंने लिया है। कुछ ही

देर में गाँव के लोग एक अरथी अपने कंधे पर लेकर वहाँ आ आते है। खण्डहर का सहारा लेकर वहाँ रुक जाते है।

एक गाँव है। जिस गाँव में भारोसेजी नामक ने आश्रम, स्कूल, खोला है। गाँव के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित की किया है। लोकसेवा, समाजसेवा, करनेवाले भारोसेजी को मौत हुई है। ग्रामीण (गाँव के) लोग एक बार किसी की अरथी लेकर गाव से निकलते हैं तो दाह - संस्कार करने के बाद गाँव वापस आते है। यही एक रिवाज है। इसलिए बारिश से बचने के लिए खण्डहर में सभी लोग आते हैं।

बारिश रुकने का नाम नहीं लेती। चारों ओर पानी ही पानी फैला है। इसलिए अरथी के पास बैठकर लोग समय बिताने के लिए भजन, गीतापाठ गाते है। ऐसा एक दृश्य नाटककार डॉ• शंकर शेष ने नाटक में दिखाया है।

ग्रामीण लोग किस प्रकृति के होते है। उनका रंगढंग, स्वभाव इसका सुंदर वर्णन नाटककार ने " चेहरे " नाटक में किया है। अलग अलग स्वभाव के लोग गाँव के साथ अपने घरवालों के साथ कैसा व्यवहार करते है। नेता बनने के लिए गाँव के नेता लोग गाँववाले के प्रति सहानुभुति दिखाते है। किसी भी घटना को मतलब से देखाते हैं।

अपने भारत में जितने भी गाँव है उन सभी गाँवों मे रहनेवालों की प्रवृत्ति, रहनसहन, स्वभाव, व्यक्तिमत्व, शोषण करणेकी प्रवृत्ति, दिखावापन, ढोंग, आरोप प्रत्यारोप पाखण्डोयता, मतलबोपन आदि बाते चित्रित करनेमें नाटककार सफल हुआ है। आज का प्रत्येक गाँस ऐसा ही है। बाहर से कुछ और अंदर से कुछ। गाँव का यह चित्रा अपने आप लोगों के संवाद व्दारा चित्रित होता है।

२-५ भाषा :-

नाटक की आधारशिला संवादों पर होती है। " चेहरे - " नाटक की भाषा पात्रानुकूल है। ग्रामीण की भाषा में ग्रामीण [गंवई] शब्दों का प्रयोग है जैसे - एकच सलोमा, वो फिल्लमवाले, काहे न करता, बेसरमो, सरम, चित्त, छोकरा, विचित्तर आदि। विनोद की भाषा में बंबईया का पुट है। जैसे - बिलकुल अपुन का माफिक बैठा हुआ, साला वांदा है, क्या बंबई में। विनोद की भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी है जैसे - आफकोर्स , फेमस, डिस्टर्ब, स्टार आदि। कुमार और छाम्बाटा हिन्दी बोलते समय बीच बीच में अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग अधिकतर मात्रा में करते है।

मुहावरों का प्रयोग आकर्षक है। " सूप बोले तो बोले चलनी क्या बोलेगी जिसमें सत्तर छेद। [८] " जरूर दाल में कुछ काला है। " [९] " हमारी पोढ़ी के मुँहपर कालिख पोती

। [10] पोल खोलना। एक - दूसरे का चेहरा उतारने में आनंद आने लगा है। [11] खुद शोशो के घरोंमें रहने के बाद दूसरे के घरों पर पत्थर फेंकना कितना खतरनाक है। आदि "चेहरे" नाटक में संक्षिप्त वाक्योंद्वारा मन के भाव स्पष्ट करते पात्र नजर आते है।

रंगमंच को दृष्टिसे उपयुक्त भाषा

भाषा :-

" चेहरे " नाटक बंबई दूरदर्शन के लिए लिखा गया। कूर यथार्थ से साक्षात्कार करनेवाला यह नाटक रंगमंच पर खेला गया। भाषा और संवाद रंगमंच के महत्वपूर्ण उपकरण है। साहित्यिक भाषा से भिन्न रंगमंच की अपनी भाषा होती है। रंगमंच की भाषा बोलचाल की, सामान्य दर्शक की भाषा होती है। श्रेष्ठ नाटक की भाषा ऐसी होती है कि उसमें भाव, विचार और चित्र तीनों को वहन करने की सामर्थ्य हो तो, पर फिर भी वह बोलचाल की भाषा से बहुत दूर न हो। " [12]

" चेहरे " नाटक की भाषा बोलचाल की भाषा है। " चेहरे " नाटक की भाषा में भाव, विचार वहन करने का सामर्थ्य है। पांडित्य पूर्ण तथा अलंकारी भाषा का प्रयोग नहीं मिलता है। लेकिन, प्रचलित मुहावरों का प्रयोग मिलता है। मुहावरों का प्रयोग करते समय नाटककार ने समयानुकूल प्रयोग किया

है। संवाद संक्षिप्त है। शब्दों की बोझिलता नहीं मिलती। रंगमंच की दृष्टिसे चेहरे नाटक की भाषा पात्रानुकुल है। ग्रामीण तथा शहरी लोगों की भाषा मे जो भेद होता है वह भेद स्पष्ट दिखाया है। ग्रामीण भाषा का प्रयोग नाटककार ने इस नाटक में किया है। साथ ही साथ कमलो - विनोद के संवादो में शहरी भाषा का पुट जुड़ा मिलता है। भाषा या संवादोंद्वारा पात्र अपने विचार दर्शकों तक पहूँचाते है।

२-६ शीर्षक :-

नाटक का शीर्षक (" चेहरे " है । नाटककार ने चेहरे के व्दन्व्द पूर्ण हाव - भाव को अधिक सूक्ष्मतापूर्वक दिखाया है। पात्रों की मनुस्थितीयों का वर्णन मंचन इतने करीब से नहीं कर सकता। नाटककार ने चेहरों के विषय में स्थान पर संकेत किए है। ग्रामीण का चेहरा ईमानदार दिखाया है [पृष्ठ ५४] लाश के सामने लटका हुआ चेहरा भावनाओ का [पृष्ठ ५८]। चेहरे पर हिंसक भाव ग्रामीण अपनी बिटिया के लिए जो खाने की बीज वस्तू ले जा रहा है उस पर दृष्टि रखना या खाना खाने की इच्छा प्रकट करना [पृष्ठ ६४] । जरा अपना चेहरा तो देखो अध्यापिकाजी सभी दृष्टप्रवृत्ति लोगों की ओर संकेत सभी लोगों को असलियत सामने आयेगी तो इनके चेहरे पिघलने लगेंगे [पृष्ठ ७१]। असली चेहरा छिपाने के लिए गंभीरता के मुखौटे [दृष्टव्य : १५, १७, २३, २९, ३१]

भगवानजीने ओढ़ रखी है। धर्म के नामपर पाखण्डता का मुखौटा पंडितजी ने ओढ़ा है। नाटक के अन्त में पात्रों के चेहरों के अलग अलग मुद्राओं में फोटो " चेहरे " नाटक के नामकरण को सार्थक करते है। कैमरा अरथी पर[पृष्ठ २१] कैमरा युवा लोगों पर [पृष्ठ २४] कैमरा ग्रामोफ्ण और गैंदासिंह पर [पृष्ठ २७] कैमरा विनोद पर [पृष्ठ ४०] कैमरा कुमार और खम्बाटा पर [पृष्ठ ४३] अर्थात एकही दृश्य बंध पर कैमरे की सहायता से नाटक मंचित किया जासकता है।

नाटककार शंकर शेष ने इस नाटक में पात्रों को पूरीस्वायत्तता दी है। श्मशान जाने के पात्रों की मनस्थिती के अनुरूप चेहरों में छिपा चेहरा हर मुखौटे की पीछे छिपा चेहरा फटे कपड़ो की तरह उतारती है अध्यापिकाजी। क्रूर यथार्थ से साक्षात्कार करनेवाला यह नाटक है। प्रतिष्ठा के मुखौटे पहनकर, प्रतिष्ठित आदमी बनकर समाज का निर्मम शोषण करनेवाले चेहरे समाज के सामने लाने का काम तथा जीवन के क्रूर यथार्थसे साक्षात्कार करनेवाला यह नाटक है।

२-७ उद्देश्य :-

इस वर्तमान जीवन में हर व्यक्ति नैतिकता की भाषा करता है, पर नैतिकता की भाषा वैयक्तिकता में अनैतिकता होती है। नेताओं की चारित्रिक खूबियों पर कू

व्यंग्य करना। मानव के हृदयमें छिपे सत्ता के आकर्षण को रेखांकित करना नाटककार का उद्देश्य है। धर्म के नामपर कर पाखण्डी लोगों पर नाटककार ने व्यंग्य किया है। धर्म के नामपर इन पाखण्डी लोगों ने मानव मन को श्रध्दा विश्वास का जितना दम घोटा है उतना किसी पूँजीपति ने भी किसी मजदूर का शोषण नहीं किया होगा। मानव के निरंतर -हास को चित्रित करनेवाला यह नाटक मानसिकता की पतनोन्मुखा जीवन गाथा है। इसतरह नाटककार शेष ने समाज के प्रतिष्ठतों का पर्दाफाश किया है। चेहरे नाटक में ऐसे चेहरे दिखाये है अर्थात हमारे चेहरे सबके अपने सबके अंदर से कुछ और बाहर से कुछ और दिखाई देनेवाले चेहरे। जिन चेहरों के पीछे क्रूरता एवं नग्नता को पेश करना नाटककार का उद्देश्य है। स्वार्थ - लालचने मनुष्य को कितना गिरा दिया, इसको दिखाना नाटक का उद्देश्य है।

२-८ निष्कर्ष :-

इस स्वार्थी समाज में मनुष्य अपनी नैतिकता खो बैठा है। हर मनुष्य किसी की सत्ता पर, पैसों पर, गहनोंपर संस्थाओं पर दृष्टि लगाये बैठा है। गांव - गांव मे दूसरों की संपत्ति हड़प करना यही सिलसिला चलता आ रहा है। हर गांव में भवानजी जैसे लोग है जो प्रतिष्ठित आदमी बनकर सत्ता हासिल करना चाहते है। कुछ अध्यापिकाजी, भारोसेजी जैसे लोग हैं। जो अपना जीवन दूसरों के लिए खपा देते है। अपनी सारी संपत्ति गांव के कल्याण के लिए अर्पण करते हैं। ऐसे पुण्यवान लोगों के आधार पर यह सृष्टि आज तक खड़ी है। जनसेवा

समाजसेवा - लोककल्याण ही इनका धर्म है।

" चेहरे " नाटक में वेश्या उद्धार की बात को है। समाज में आज भी किसी विधवा को सन्मान नहीं दिया जाता वहाँ एक वेश्या का उद्धार भारोसेजी जैसे महान लोग ही करते है। अध्यापिकाजी एक वेश्या थी लेकिन भारोसेजी उनकी पिछली जिंदगी पर पूर्ण रूप से पर्दा डालते है। एक वेश्या अध्यापिकाजी भी पूर्णरूप से अपनी पिछली जिंदगी भूलकर अपना सारा पैसा, गहने संस्था के लिए अर्पण करती है। नाटककार आज के बौने समाज के सामने कुछ आदर्श रखाने में सफल हुये है।

यह नाटक पढ़ने पर या देखने पर अध्यापिकाजी जैसी वेश्या की छाप मनपटल पर अपनी झाँकी छोड़ जाती है। आदर्श स्त्री के रूप में उसे हम स्वीकार करते है। चेहरे पर चेहरा चढ़ाए आज हर आदमी अपना असली चेहरा छुपाए, रखता है। समाज का शोषण करनेवाले ढोंगी लोगोंसे कई अच्छी अध्यापिका जैसी वेश्या है। नेता है। प्रतिष्ठा के मुखौटे पहन कर प्रतिष्ठित आदमी समाज का निर्मम शोषण करता है। आज के नेता लोग बिना मतलब से किसी को सहानुभूति नहीं दिखाते। अभिनय करने की कला उनके पास है।

" चेहरे " नाटक में चित्रित हर पात्र अपने गांव के किसी न किसी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करनेवाला लगता

है । गांव गांव में भवानजी , गेंदासिंह, सुखालाल, पंडितजी जैसे लोग आज भी मौजूद है।

000

संदर्भ सूचि

::::::::::::::::

१] " चेहरे " नाटक
डॉ· शंकर शेष
पृष्ठ - ८·

२] राजपथ से जनपथ -
नाटशिल्पी शंकर शेष
डॉ· सुरेश एवं डॉ· वीणा गौतम,
पृष्ठ - १७३

३] " चेहरे " नाटक - पृष्ठ ७१
राजपथ से जनपथ - नाटशिल्पी शंकर शेष
डॉ· सुरेश एवं डॉ· वीणा गौतम
पृष्ठ - १७१·

४] राजपथ से जनपथ - नाटशिल्पी शंकर शेष
डॉ· सुरेश एवं डॉ· वीणा गौतम
पृष्ठ - १६८

५] राजपथ से जनपथ - नाटशिल्पी शंकर शेष
पृष्ठ - १६८·

0000

६] " पेहरे " नाटक
डॉ॰ शंकर शेष
पृष्ठ - ७२

७] नेमिचंद्र जैन रंगमंच दर्शन
पृष्ठ - २३

८] " पेहरे " नाटक
पृष्ठ - ६४

९] वही
पृष्ठ - ६५

१०] वही
पृष्ठ- ४७

११] वही
पृष्ठ - ७०

१२] वही
पृष्ठ - ७०

0000